

बीस स्थानक तप चैत्यवन्दन—स्तुति—स्तवन

चैत्यवन्दन (१)

बीस स्थानक तप कियाँ, प्रगटे पुण्य अगाध।
तीर्थकर पद प्राप्त हो, हो सुख अव्याबाध॥१॥
तीर्थकर जो हैं हुए, होंगे तीनों काल।
बीस स्थानक साधते, तज कर आल पंपाल॥२॥
अरिहंतादिक बीस पद, भेदा भेद विचार।
निज पद में प्रगटे यदि, धन धन वह नर—नार॥३॥
शक्ति रूप सब में रहे, व्यक्त होय विधि योग।
व्यक्त हुए उनको नमूं, सविनय त्रिकरण योग॥४॥
सुखसागर भगवान जिन, हरि पूजित जगदीश।
तन्मय वन्दूं, तीर्थपति, उपकारी चौबीस॥५॥

चैत्यवन्दन (२)

अतिशयवन्त महन्त रूप, अनुपम गुणधारी।
आराधे जिन कूं सकल, तीर्थकर शिवकारी॥१॥
अरिहन्त सिद्ध प्रवचन गणी, स्थिविर बहु श्रुत जान।
तपसी श्रुत दर्शन विनय, आवश्यक बलिदान॥२॥
शील क्रिया तप धारिए, वैयावच्च समाधि।
ज्ञान ग्रहण श्रुत भक्ति तीर्थ, सेवन त्याग उपाधि॥३॥

फैले त्रिभुवन में साधन पुण्य प्रताप॥४॥

स्तुति (२)

अरिहन्त सिद्ध पवयण, आचारज थिवराण,
पाठक मुनिवर ज्ञाने, दर्शन विनय वरनाण।
चारित्र ब्रह्म किया, तप गोयम जिन भाण,
संयम नाणी श्रुत, संघ सेवो बीस ठाण॥१॥
उत्कृष्टि जिनवर, एक सौ सित्तर धीर,
वली काल जघन्ये, जिनवर बीस गंभीर।
जिन थाय अनन्ता, अतीत अनागत काल,
ए बीसे थानक, आराधे गुणमाल॥२॥
आवश्यक बे वेला, जिन वन्दन त्रिकाल,
थानक तप गिणवो, सहस दोय सुकुमाल।
काउसग्ग गुण स्तवना, पूजा प्रभु बन सार,
इम सामीवत्सल, करता भवनो पार॥३॥
समरीजे अहर्निस, गुणए गोसुर साथ,
जक्ष जक्षनी सुरपति, वैयावच्च कर ताथा।
थानक तप विधि सुं, जे सेवे मन रंगे।
'देवचन्द्र' आणाए, सानिध करे तसु चंगे॥४॥

ए विंशति स्थानक अमल, सेवो सरधा युक्त।
परमात्म संपद प्रगट, कारक बंधन मुक्त॥४॥
मनवांछित सहु सिद्धकर, ज्ञायक सुख भर कंद।
जिनको वन्दे भावधर, श्री कुशलेन्दु गणिंद॥५॥

स्तुति (१)

बीस स्थानक में गुणि गुण भेदा भेद,
ध्याता जो ध्यावे निर्भय मात्र अखेद।
तीर्थकर पदवी पावे पुण्य प्रधान,
वन्दूं विधियोगे त्रिकरण शुद्धि विधान॥१॥
त्रैकालिक भावे तीर्थकर भगवान,
भवसागर तारण कारण रूप महान।
होते हैं होंगे और हुए पद वीस,
सेवा से मेवा वन्दूं जिन जगदीश॥२॥
बीस स्थानक तप साधन सुखद विधान,
ज्ञानादिक आगम गावे गुरु गम ज्ञान।
आराधे भविजन पावे पद कल्याण,
सुविहित जिन आगम वन्दूं जीवन प्राण॥३॥
हरि पूजित श्री जिन शासन वासित भाव,
भवि वीस स्थानक साधन पुण्य प्रभाव।
सुर असुर उन्हीं के होय सहायक आप,

स्तवन (१)

(तर्ज — फेसरिया थांसु प्रीत लगी रे सच्चे भाव सुं)

तीर्थकर वंदो तारे दुःख वारे तिहुं काल में॥टेर॥
अनुपम आत्म दर्शन योगे, परमात्म पद ध्याने।
जल में कमल रहे ज्यों जीवन, साधक पद सनमाने रे।
तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥१॥
महा मोह मति मूढ जगत जन, हों जिन शासन रागी।
आधि व्याधि उपाधि मुक्त हो, भाव सुखी बड़ भागी रे।
तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥२॥
तीन भुवन उपकार भाव, कल्याण मित्र जयकारी।
पुण्य महोदय गुणी महाशय, अविकारी अवतारी रे।
तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥३॥
बीस स्थानक महा साधना, साधक निज भव तीजे।
उत्तरोत्तर सुकृत सुख भोगी, प्रभुता गुण रस भीजे रे।
तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥४॥
संघ चतुर्विध तीर्थ थापते, अद्भुत अतिशय धारी।
तीर्थकर वर नाम कर्म को, सफल करे बलिहारी रे।
तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥५॥
जनम—मरण—जीवन कल्याणी, जग कल्याण विधाता।
तीर्थकर दर्शन धन पाऊँ, धन दिन पुण्य प्रभाता रे।

तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥6॥
 प्रभु दर्शन परमार्थ पूरण, जो कर पावे प्राणी।
 ज्योतिर्मय जग में वह पावन, खोले निज गुण खाणी रे।
 तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥7॥
 अरिहंतादिक बीस पदों की, सेवा शिव सुखकारी।
 अप्रमत्त भावे कर भविजन, पावे पद अविकारी रे।
 तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥8॥
 आठ सिद्धि नव निधि निज घर में, प्रकटे परमोदारी।
 तीन लोक साम्राज्य सम्पदा, दासी बने बिचारी रे।
 तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥9॥
 बीस स्थानक विधि जिन आगम, गुरु गम से नर नारी।
 आराधे साधे निज सिद्धी, अजरामर पद धारी रे।
 तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥10॥
 सुख सागर भगवान महोदय, जिन हरि पूजित स्वामी।
 बीस स्थानक गुणी गुण गाऊँ, सादर सदा नमामि रे।
 तीर्थकर वंदो तारे दुःख॥11॥

स्तवन (2)

(तर्ज – बिना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल बेकरारी है)
 नमूं निज देव जयकारी, हृदय शुद्ध मात्र लाकर के।
 जपूं नित नाम की माला, हृदय शुद्ध भाव लाकर के॥टे॥
 तिरावे तीर्थ कहलाता, प्रभुजी आप तीर्थकर।
 मैं आऊँ आप तक कैसे? हृदय शुद्ध भाव लाकर के॥1॥
 प्रभुजी बीस स्थानक तप, तपात आठ कर्मों को।
 सविधि साधूं कहो कैसे? हृदय शुद्ध भाव लाकर के॥2॥
 जिनेश्वर आप ज्योतिर्मय, महा अन्धेर हरते हैं।
 सुज्योति पाउ में कैसे? हृदय शुद्ध भाव लाकर के॥3॥
 प्रभु अरिहंत हे स्वामी, सुनामी सिद्ध सुखकारी।
 बनू सुखिया यहां कैसे? हृदय शुद्ध भाव लाकर के॥4॥
 अगम सुख सिन्धु हे भगवन् परम हरि पूज्य उपकारी।
 मिलूँ मैं आप से कैसे? हृदय शुद्ध भाव लाकर के॥5॥

1. **12 प्रदक्षिणा (फेरी) एवं 12 खमासमण** लगायें।
 (अ) फेरी लगाते हुए निम्न दोहा बोलें –

परम पंच परमेष्ठिमां, परमेश्वर भगवान्।

चार निक्षेपे ध्याइये, नमो नमो जिन भाण॥

(ब) एक-एक फेरी लगाने के बाद निम्नलिखित पदों का क्रमशः उच्चारण करते जायें।

1. अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
2. पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
3. दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
4. चामर युगल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
5. स्वर्ण सिंहासन प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
6. भामण्डल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
7. देव दुंदुभी प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
8. छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
9. अपायापगमातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः

10. पूजातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः

11. वचनातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः

12. ज्ञानातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः

(स) प्रत्येक पद का उच्चारण करने के पश्चात् खमासमण दें।

2. **12 साधिया** करके ऊपर 1 नग फल (केला, सेव, नाशपत्ती, श्रीफल, बादाम आदि) तथा 12 नग नैवेद्य (चक्की, मखाने, चीरोंजी, साकर आदि) यथाशक्ति चढ़ायें।
 3. 12 लोगस्स का **कायोत्सर्ग** करें।
 4. 'ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं' की **20 माला** फेरें (उपवास के पहले 5 माला अवश्य फेरें)।
 5. **चैत्यवंदन तथा देववंदन** करें।
 6. यथासमय पच्चक्खाण लें।
 7. जल लेने के पूर्व **पच्चक्खाण पारने की क्रिया** करें – इरियावहियं क्रिया, जयउसामिअ का चैत्यवंदन, मुंहपत्ती पडिलेहण आदि।